पौष : फसल के लिए पुष्ययात्रा का अवसर और वर्षफल का दर्शक

डॉ. श्रीकृष्ण "जुगनू"

"पौष मास हमारी आस्थाओं के जागरण का अच्छा अवसर है। 'देवगुरोस्तु हेम्नो' सर्वार्थचिन्तामणि[4] के इस निर्देश के अनुसार इस ऋतु का स्वामी बृहस्पति है जो स्वयं सद्बुद्धि प्रदाता हैं। ऐसे में इस अवधि में ज्ञानात्मक चेतना के लिए सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय और जपादि किया जाना चाहिए। ॐ बृं बृहस्पतये नमः' मन्त्र सभी राशि के जातकों के लिए श्रेय प्रदायक सिद्ध होगा।"

"कहा गया है कि पौष मास में जबकि फसल खडी हो, तब कोई शुभ दिन देखकर लोगों को जुटाकर एक खेत से दूसरे खेत तक पुष्य-यात्रा का आयोजन करना चाहिए।"

पौष या पूस मास का माहात्म्य किसान के लिए तो है ही, ईश्वराधना के रूप में भी है। ज्योतिषीय मान्यताओं में इस मास में यदि आकाशीय गतिविधियों पर दृष्टि रखी जाए तो अगले वर्ष के शुभाशुभ होने का पूर्वानुमान भी किया जा सकता है। पौष को नया मास और धन्वसंक्रान्ति का अवसर कहा गया है। इस मास की पुराणों में स्नान और दान के मास के रूप में बड़ी महिमा है-

नवमे धनुषि पौषे मासि प्रत्यहं नीवारं गुडं च दद्यात्।[1]

इसी अवधि में धनुर्मास पड़ता है, इसका आशय है कि यह धनु की संक्रान्ति का महीना है, जिसके लिए हेमाद्रि ने विश्वामित्र के वचन उद्धृत किए हैं-

धनुःप्रवेशे वस्त्राणां यानानां च महत्फलम्।[2]

धनुर्मास को शुभ कार्यों की दृष्टि से वर्जित माना जाता है किन्तु यह अवधि हमारी आस्थाओं को मजबूती देने की दृष्टि से बहुत उपयोगी और फलदायी होती है। कामना लेकर इस अवधि में किया गया पाठ-पूजन निश्चित ही फलप्रद होता है। इसके आरम्भ से लेकर मकर संक्रांति तक, पूरे मास को धनुर्मास और लोक-मान्यताओं में मल मास कहा जाता है। वृश्चिक व धनु राशि में सूर्य के रहने पर हेमन्त ऋतु होती है- **हेमन्त वृश्चिकद्वन्द्वे।**[3]

पौष मास हमारी आस्थाओं के जागरण का अच्छा अवसर है। **'देवगुरोस्तु हेम्नो' सर्वार्थचिन्तामणि**[4] के इस निर्देश के अनुसार इस ऋतु का स्वामी बृहस्पति है जो स्वयं सद्बुद्धि प्रदाता हैं। ऐसे में इस अवधि में ज्ञानात्मक चेतना के लिए सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय और जपादि किया जाना चाहिए। ॐ बृं बृहस्पतये नमः' मन्त्र सभी राशि के जातकों के लिए श्रेय प्रदायक सिद्ध होगा। ज्योतिष शास्त्रों में सूर्य के दक्षिणायन गमन पर्यंत काल को रात्रि के रूप में जाना जाता है, ऐसे में इस अवधि में मुहूर्तों को विराम लग जाता है। सामान्यत: विवाह, चूडाकर्म, जलाशय, देवप्रतिष्ठा, जलस्रोत, उद्यान,

1. सुदामा मिश्र, दानदीपिका, (1936), जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, बनारस, पृ. 85.
2. तदेव, पृ. 87
3. लक्ष्मीकान्त कन्याल, (1931ई.), ज्योतिषतत्त्वप्रकाश, 1.34, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 10.
4. सर्वार्थचिन्तामणि, श्लोकसंख्या 50, (1906ई.) लक्ष्मीवेंकटेश प्रेस, मुंबई, पृ. 5.

*फैलो इंडोलॉजी, राजश्री कॉलोनी 40, विनायक नगर, उदयपुर, राजस्थान, मेल : skjugnu@gmail.com

यज्ञोपवीत, अग्नि का आधान, चौलकर्म, शपथ समारोह और नूतन गृह प्रवेश आदि नहीं किए जाते हैं। यही मत धाराधिप भोजदेव कृत **राजमार्तण्ड** में आया है

रात्रिभागः समाख्यातः खरांशोर्दक्षिणायनम्।
व्रतबन्धादिकं तत्र चूडाकर्म च वर्जयेत्॥
जलाशय - सुरारामप्रतिष्ठा - व्रतबन्धनम्।
आन्याधानं विवाहं च चौलं राज्याभिषेचनम्।
नवगेहप्रवेशादीन् न कुर्यादक्षिणायने।[5]

पौष में पुष्ययात्रा का प्रचलन

राजमार्तण्ड को प्रथम निबन्ध ग्रन्थ स्वीकारा जाता है। उसमें **'कृषिपराशर'** के श्लोक भी संग्रहित है। **कृषिपराशर** में पौष मास में लोगों द्वारा समूह बनाकर पुष्य यात्रा उत्सव आयोजित करने का सन्दर्भ मिलता है। यह प्राचीन काल में वैसे ही होता था, जैसा कि कुछ समय पहले तक खेतों में सहभोज रखने का प्रचलन था। कहा गया है कि पौष मास में जबकि फसल खडी हो, तब कोई शुभ दिन देखकर लोगों को जुटाकर एक खेत से दूसरे खेत तक पुष्य-यात्रा का आयोजन करना चाहिए

अखण्डिते ततो धान्यो पौषे मासि शुभे दिने।
पुष्ययात्रां जनाः कुर्युरन्योन्यक्षेत्रसन्धौ॥[6]

पराशर ने कहा है : लोगों को चाहिए कि वे बस्ती के वृद्ध सज्जनों को साथ लें और यात्रा के बाद भोजन पकाएँ। इसमें खीर, मत्स्य, मांस तथा शाकाहारी भोजन हो। निरामिष भोजन हींग, मरिच आदि से युक्त हों। दही, दूध, घी का प्रयोग करते हुए खीर बनाएँ और पानक द्रव्य भी तैयार करें। नाना प्रकार के फलों का प्रयोग करें जिसमें मूल भी हों। मिठाइयों और पिष्टक से भोजन को विस्तार देना चाहिए और अन्नादि को केले के पत्तों पर परोसकर वृद्धों के आगे रखना चाहिए। इसके बाद, आचमन करते हुए परस्पर घिसे हुए चन्दन का लेपन करें और सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग भी करें। इस यात्रा में सभी नवीन वस्त्रों से अलंकृत हों। ताम्बूल का प्रयोग करें। फूलों के आभरण धारण करें। इन्द्र देव को नमस्कार करते हुए गाजे-बाजे के साथ नृत्यादि भी करें। तत्पश्चात् सभी को भास्कर की ओर देखकर मन्त्र पाठ करना चाहिए। इसके चार श्लोक दिए गए हैं

क्षेत्रे चाखण्डितधान्ये पुष्ययात्राप्रभावतः।
अस्माभिर्मानिता सर्वैः सास्मान् पातु शुभप्रदा॥
कर्मणा मनसा वाचा ये चास्माकं विरोधिनः।
सर्वे ते प्रशमं यान्तु पुष्पयात्राप्रभावतः॥
धान्यवृद्धिः यशोवृद्धिः प्रवृद्धिर्दारपुत्रयोः।
राजसम्मानवृद्धिश्च गवां वृद्धिस्तथैव च॥
मन्त्रशासनवृद्धिश्च धनवृद्धिरहर्निशम्।
अस्माकमस्तु सततं यावत् पूर्णो न वत्सरः॥[7]

उक्त मन्त्रमय प्रार्थना में यह कामना की गई है कि इस अविभाजित धान्य के खेत पर हम सभी लोगों द्वारा सम्मानित लक्ष्मी पुष्य-यात्रा के प्रभाव से हमें शुभफल प्रदान करें। हमारी रक्षा भी करें। जो कोई मन कर्म-वचन से हमारे विरोधी हों, वे

5. भोजराज, राजमार्तण्ड, श्रीकृष्ण जुगनू (सम्पा.), 2011 ई. चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, श्लोक 278.
6. कृषिपराशर, श्लोक सं. श्रीकृष्ण जुगनू (सम्पा.), प्रकाशनाधीन, श्लोक सं. 221.
7. तदेव, 229-232

इस पुष्य-यात्रा के प्रभाव से शान्त हो जाएँ। हमारे लिए इस उत्पादित होने वाले धान्य की अभिवृद्धि हो, कीर्ति का प्रसार हो। स्त्री और पुत्रों की वृद्धि हो। राजकीय सम्मान की वृद्धि हों, गोधन की अभिवृद्धि हों। शासन के मन्त्रियों की वृद्धि हों, धन की अहर्निश अभिवृद्धि हों। ऐसी वृद्धि का क्रम तब तक निरन्तर रहे, जब तक कि यह वर्ष पूरा न हो जाए।

यह भी रोचक प्रसंग है कि समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाली इस यात्रा को मुनि पराशर ने ही प्रवर्तित किया था-

हिताय सर्वलोकानां पुष्ययात्रा मनोहरा।
पुरा पराशरेणेयं कृता सर्वार्थसाधिनी।।[8]

ग्रन्थ में यह भी कहा गया है कि फसल की अभिवृद्धि और समस्त बाधा विघ्नों के शमन के लिए इस पुष्य-यात्रा का आयोजन करना चाहिए-

तस्मादियं प्रयत्नेन पुष्ययात्राविधानतः।
सर्वविध्नप्रशान्त्यर्थं कार्या शस्यस्य वृद्धये।।[9]

दान का अवसर

'दानदीपिका' में कहा गया है कि इस मास में गुड़ और ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि का दान करना चाहिए। इनके मन्त्र भी बताए गए हैं

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः।
मम तस्मात्परां शान्तिं ददस्व गुड सर्वदा।।[10]

विष्णु की प्रीति के उद्देश्य से कम्बल व ऊर्णवस्त्र के दान के मन इस प्रकार हैं-

शीतवर्षाहरः पुण्यो दृष्टो बलविवर्द्धनः।
कम्बलस्य प्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥
ऊर्णावस्त्रं चारुचित्रं देवानां प्रीतिवर्द्धनम्।
सुखस्पर्शकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।[11]

उक्त ग्रन्थ में स्कान्द के वचनों को उद्धृत किया गया है जिनमें आया है कि पूस मास में गोदान, वस्त्रदान, धान्यदान, लवणदान और गुड़ का दान होना चाहिए, विशेषकर चांदी, घृत, नारियल, बिजौरा नीबू और भूरे कोहड़े का दान भी किया जा सकता है। ऐसा कम्बल जिसमें भीतर रेशम हो (पट्टगर्भ) तो वह घोर शीत को रोकता है-

पौषमासे तु सम्प्राप्ते गोदानानि च कारयेत्।
वस्त्रदानं तथा कार्य धान्यदानं तथैव च॥
लवणस्य तथा दानं गुडदानं तथैव च।
विशेषतो रौप्यदानमाज्यदानं विशेषतः॥
नारिकेलं मातुलुङ्गं कूष्माण्डं तु तथैव च।
कम्बलः पट्टगर्भश्चेन्महाशीतविनाशकः।
स एव विपरीतश्चेन्महावृष्टिविनाशकः।।[12]

8. तदेव, श्लोक 234
9. तदेव श्लोक 235.
10. सुदामा मिश्र, पूर्वोक्त, पृ. 86.
11. उपरिवत्, पृ. 86
12. उपरिवत्, पृ. 86-87.

शौनक के प्रति आए स्कान्द वचनों में यह भी कहा गया है कि धनुराशि के सूर्य में कुरुक्षेत्र, प्रयाग और गोदावरी नदी के तट पर ऐसा बोलकर दीपदान करना चाहिए- विष्णु प्रसन्न हों। इससे कोटि-कोटि यज्ञ करने से जो पुण्य मिलता है, वही पुण्य सुलभ होता है। पुरुष द्वारा दीप को बुझाने और स्त्री द्वारा कोहड़े को काटने का जो दोष लगता है, वह निवृत्त होता है –

वसुराशौ तु सम्प्राप्ते श्रीसूर्ये शृणु शौनक।
कुरुक्षेत्रे प्रयागे च तथा गोदावरीतटे।
दीपदानं प्रकर्तव्यं गोविन्दः प्रीयतामिति।
कोटियज्ञेन यत्पुण्यं तत्पुण्यं समवाप्यते।।
पुरुषाद्दीपविच्छित्तिः कृष्माण्डच्छेदनं स्त्रियाः।
अचिरेणैव कालेन वंशच्छेदो भवेद्ध्रुवम्।।[13]

संवत्सर के फल का प्रेरक :

पौष मास से आगामी वर्ष में होने वाली वर्षा के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जाता रहा है। इस मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या को यदि आकाशीय गर्भ हो तो सुभिक्ष का योग बनता है। यह योग आरोग्यता भी प्रदान करता है और यह गर्भ श्रावण की पूर्णिमा को वर्षा करवाता है, **मयूरचित्रकम्** का मत है।

कुह्वन्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते।
तदा सुभिक्षमारोग्यं श्रावण्यां वारिवर्षणम्।।[14]

पौष कृष्णा सप्तमी पर यदि आधी रात के बाद वर्षा हो अथवा बादलों की गर्जना हो तो उस क्षेत्र में वर्षा काल में वृष्टि नहीं होती है. यह महर्षि नारद का कथन है। पौष मास के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के दिन यदि बादल दिखाई दें, गरजे या बरसें, इन्द्रधनुष या बिजलियाँ चमकती दिखाई दें तो वर्षाकाल में उत्तम वर्षा होगी, अन्यथा वर्षाकाल में जल नहीं बरसेगा। पौष शुक्ला पंचमी को यदि हिमवर्षा या तुषारापात हो तो वर्षाकाल में बहुत वर्षा होती है। पौष शुक्ला सप्तमी को रेवती, अष्टमी को अश्विनी तथा नवमी को भरणी नक्षत्र हो जो इस वर्ष में दिखाई देता है, में विद्युत् चमकती दिखाई दे तो पावस काल में पर्याप्त वर्षा होती है, इसमें कोई संशय नहीं है। पौष की अमावस्या को मूल नक्षत्र हो तो घास पर्याप्त सस्ता होता है, यह योग इस वर्ष मिल रहा है। पौष की एकादशी को रोहिणी नक्षत्र में वर्षा हो तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है। यह योग आगामी 16 जनवरी को पड़ रहा है। पौष की संक्रांति के दिन इस वर्ष शुक्रवार होने से अनाज के दामों में स्थिरता बनी रहेगी। पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक आकाश में बादल हो तो वर्षाकाल में आर्द्रा से लेकर स्वाती नक्षत्र तक वर्षा होती है। ऐसे में 3 से 14 जनवरी तक आकाश में बादलों का निरीक्षण करना चाहिए। पौष शुक्ला सप्तमी को बादल हो तो श्रावण शुक्ल सप्तमी को उतम वर्षा होगी, **मयूरचित्रम्** का ऐसा मत है :

शुक्लायां यदि सप्तम्यां धनैराच्छादितं नभः।
तदा स्याच्छ्रावणे मासि सप्तम्यां वृष्टिरुत्तमाः।।[15]

'कृत्यकल्पतरु' के अनुसार पौष कृष्णा अष्टमी को बुधवार हो तो उस दिन स्नान व दानादि से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। **शिवपुराण** की विद्येश्वर संहिता के अनुसार पौष मास में शतभिषा नक्षत्र आने पर विधिपूर्वक गणेशजी की पूजा करनी चाहिए। यह पूजा अभीष्ट सिद्धि को देने वाली है। पंचांग से वर्ष में ऐसा देखना चाहिए। पौषमास में पूरे महीने भर जितेंद्रिय रहकर गायत्री का जप एवं रात्रि में सोने से पूर्व तक भगवान् शिव के पंचाक्षरी मन्त्र का जप करना मोक्ष प्रदाता बताया गया है।

13. उपरिवत्, पृ. 88.
14. नारदप्रणीतम् वृष्टिविज्ञानम् मयूरचित्रम्, डा. श्रीकृष्ण जुगनू एवं अनुभूति पोद्दार (सम्पा.) अ.12. श्लो.26, परिमल पब्लिकेशन्स,, दिल्ली,
15. उपरिवत्, अध्याय 12, श्लोक 30

किसके लिए शुभ :

ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार धनु की संक्रांति लेखकों, पत्रकारों, धर्मोपदेशकर्ताओं, व्याख्याताओं, आचार्यादि वर्गों के लिए शुभकारक सिद्ध होगी। इसी प्रकार राजकीय सेवा वालों, राजनेताओं, राजदूत आदि को नई दृष्टि देने का अवसर सिद्ध हो सकता है किन्तु सैनिकों, सिपाहियों और रक्षात्मक मामलों से जुड़े लोगों को कष्ट हो सकता है। मसाला और गृह निर्माणोपयोगी सामग्री के भावों में इजाफा हो सकता है।

इस मास में जन्म लेने वालों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में **कोष्ठिप्रदीप** में आया है कि ऐसा व्यक्ति अपनी बात को छुपाकर रखने वाला, काया से छरहरा किन्तु परोपकारी, अपने परिश्रम से धनार्जित करनेवाला और कष्ट उठाकर भी धन का संचय करने वाला, कानून का जानकार और धैर्य का परिचय देने वाला सुधीर होता है :

निगूढमन्त्रः सुकृशांगयष्टि : परोपकारी पितृवित्तहीनः।
कष्टान्वितार्थव्ययकृद्विधिज्ञः पौषप्रसूतः पुरुषः सुधीरः॥[16]

***

16. शब्दकल्पद्रुम, राधाकान्तदेव, 'पौष' शब्द के विवेचन में उद्धृत।

पौष मास में दशतारक का विचार

पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति।
आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।।
वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः।
अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भा।।

यह प्राचीन भारत में वर्षा सम्बन्धी भविष्यवाणी का एक रूप है। पौष मास में मूल नक्षत्र के अन्त से लेकर भरणी नक्षत्र तक 'दशतारक' कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी, तथा भरणी ये दश नक्षत्र आते हैं। ये दस दिन लगभग पौष मास की अमावस्या से दशमी तक रहता है। यहाँ कहा गया है कि इन दस नक्षत्रों वाले दिनों में यदि चन्द्रमा के संचार होने पर मेघ गर्भ धारण करता है तो आर्द्रा से विशाखा तक 10 नक्षत्रों में सूर्य के रहने पर अर्थात् आषाढ से अग्रहायण मास तक अच्छी वर्षा होती है। नौ प्रकार की घटना होने पर मेघ का गर्भधारण माना जाता है- तेज हवा बहना, बादल लगना, मेघ का गर्जन, बिजली चमकना, वर्षा होना, ओला गिरना, वज्रपात होना, विना समय का भी सन्ध्या-जैसा हो जाना तथा चन्द्रमा एवं सूर्य के चारों ओर मण्डल बनना- इन नौ लक्षणों से मेघ का गर्भ धारण माना जाता है।